

सुरंगत साक्ष्य:-

Sub-Evidence part-III

जबकि व्यापारपालक को एक व्यक्ति की किनी अथवा
 दुसरे व्यापारी के साथ में सप कारती से, नए
 ऐसी व्यापारी की अतिरिक्त के साथ में एक
 व्यापारिक के कारण उगा अतिरिक्त रूप
 जिसके पास कुटुम्बी के सदस्य के साथ में
 या अन्यथा उस विषय के सम्बन्ध में
 ज्ञान के विशेष साप्यत हैं सुरंगत रूप
 हैं। परंतु (1869 का 4) के अधिन कार्यवाहियों
 के मा अधिन 63 (1860 का 45) 198 के
 अधिन कार्यवाहियों में ऐसी रूप कार्यवाहियों के
 लिए जार्वर नहीं होता,
 और "क" और "ख" विकसित हैं उनके
 और पडोस रिश्तेदार शादी-प्यार की बात
 की बाह्य नहीं जानी जायगी।
 के "क" का अर्थ यह है। यह रूप कुटुम्बी
 के सदस्यों उगा क से सदैव उभर
 वरक किता जाना है सुरंगत है।

व्यापारिक के सामने एक यह प्रश्न है कि एक
 व्यापारिक किनी अथवा के साथ सप कारती
 साथ हैं और उसे इन साथ में सप कारती करना
 कुटुम्बी के किनी सदस्य का किनी अथ
 है। व्यापारिक जिसे विषय के सम्बन्ध में
 कि ज्ञान के विशेष साप्यत हैं कि अज्ञान
 उगा अतिरिक्त रूप सुरंगत रूप होती
 हैं। यदि प्रश्न यह है क्या उनके
 दोहरा और शाका प्रति पत्नी है
 कि यदि व कई वर्षों से एक साथ
 रह रहे हैं और यदि उनके कुटुम्बी

तब साक्ष की कार्यात्मकता से उसके दिमाग पर
 एक प्रतिबुद्ध प्रभाव पड़ने की आशंका
 है और उसके द्वारा उसका स्वतंत्र मन
 भी संभव नहीं होता है। इसमें क्लिनिकल
 एम्पायलिस का केंद्रबिंदु है विवाधक तथ्यों
 की जांच करना, न कि व्यक्तियों की।
 यह संभव है कि किसी दुष्ट या दुराचारी
 व्यक्ति का भावना या ध्यान ही और धर्म
 या अदलालियत ही इसी प्रकार का यह
 भी संभव है कि किसी व्यापारवादी और
 रूपाचारी व्यक्ति का भावना ध्यान न ही
 कतः संप्रकृत व्यक्ति के शील की
 वादकी सीमा के बाहर रखने से
 एम्पायलिस भावना की जांच खुले मन
 से हो सकता है।

शील विवाधक कुछ भावनाएँ ऐसी
 होती हैं जिनमें वादी या प्रतिवादी का
 शील स्वतः विवाधक तथ्य हो जाता है।
 ऐसी दिवान है उसके शील का साक्ष
 सुसंगत होता है। विधवा और और
 उधका कर्तित्व उसके अपने मृत प्रति
 की सम्पत्ति से वांचित कर देता है।
 विधवा रिक जब शारीक का लत नर उधका
 का पौषवा उधका ~~है~~ होने वाला
 प्रति या अन्ध करेगा। पूर्व प्रतिवा
 उधका हक नहीं रहेगा।
 उन दोनों भावनाओं में शील का
 साक्ष सुसंगत होता है।